जगदंगा प्रसाद दीक्षित के कथा साहित्य में वेश्या जीवन और उनके सामाजिक आयाम

प्रा. लक्ष्मण किसनराव पेटकुले (हिंदी विभागाध्यक्ष) एस. एन. मोर महाविद्यालय, तुमसर, जि. भंडारा

सारांश :

जगदंगा प्रसाद दीक्षित के कथा साहित्य में कई सामाजिक समस्याओं का उद्‌घाटन हुआ है। उन्ही समस्याओं में मानवीय संवेदनाओं को झगझोड देनेवाली समस्या है वैश्यावृत्ति। वेश्यावृत्ति एक ऐसी समस्या जो प्राचीन काल से लेकर आज तक समाज में विद्यमान है। इसका स्वरूप हर दौर में बदलता नजर आया है। दीक्षित के साहित्य में 'मुरदाघर', 'कटा हुआ आसमान', 'अकाल' आदि उपन्यासों के साथ 'शुरूआत तथा अन्य कहानियाँ' इस कथा साहित्य में वैश्याओं का चित्रण किया गया है। जो विवशता में इस व्यवसाय को अपनाती आयी है। दीक्षित के साहित्य में वेश्याओं के तीन आयाम पाये जाते है।

प्रस्तावना :

नारी जीवन को यातनामय बनाने वाली समस्या है वेश्यावृत्ति। पैसों को लेकर अथवा धन संपत्ति को लेकर एक स्त्री एक से अधिक पुरूषों के साथ जब यौन संबंध रखती है उसे वेश्या कहते है। जानकारों का कहना है कि उदरनिर्वाह के लिए जब वह पर्याप्त साधन जूटाने में असफल हो जाती है तब उसे मजबुरन वेश्या–व्यवसाय को अपनाना पड़ता है। पेट की भूख मिटाना ही वेश्यावृत्ति का मूल है, किंतु केवल आर्थिक आवश्यकता पूर्ति के लिए वेश्यावृत्ति निर्माण होती है ऐसा नहीं, क्योंकि गरीबी ही समाज के कुछ नारियों को वेश्या–व्यवसाय करने के लिए मजबूर करती है। यह बात कुछ हद तक सही भी है लेकिन विद्‌वानों ने वेश्यावृत्ति के लिए कई कारणों को जिम्मेदार ठहराया है। प्राचीन काल से लेकर आज तक वेश्यावृत्ति निरंतर चली आ रही है। इस संबंध में प्रायः सभी का एक एकमत है कि वेश्यावृत्ति एक अत्यंत गंभीर समस्या है और वह स्वस्थ समाज तथा प्रगतिशील राष्ट्र के लिए एक कलंक है।

दीक्षित के कथा साहित्य में वेश्यावृत्ति का चित्रण किया गया है। उनका प्रसिद्‌ध उपन्यास 'मुरदाघर' कहानी 'गंदगी और जिंदगी', 'दृष्टि–परिवर्तन', 'मुहब्बत' आदि कथा साहित्य में वेश्याओं के दुःख दर्द उनकी समस्याएँ तथा उनकी जीवन शैली के संबंध में लेखक ने बड़ा ही यथार्थ चित्रण किया है। वेश्यावृत्ति की तह में जाने से पूर्व यह जानना आवश्यक है कि 'वेश्यावृत्ति' क्या है ? अतः 'वेश्या' शब्द से क्या तात्पर्य है।

वेश्या शब्द का अर्थ :

'आधुनिक हिंदी शब्द कोष' में 'वे या' शब्द के कई पर्याय दिए गए हैं। उदाः वारांगना, क्रीडा नारी, गणिका, वारवधू, गणेरू, वारवनिता, रूपजीवा, तवायफ आदि।[1] तथा 'व्यावहारिक पर्याय कोष' में रंडी, वारविलासिनी, सामान्या पातुर आदि पर्याय दिए गए हैं।[2]

यद्यपि 'वेश्या' शब्द के अनेक पर्याय है, किंतु उसका प्रमुख पर्याय 'गणिका' ही प्रचलित है। 'गणिका' शब्द की व्युत्पत्ति इस प्रकार है गण + ठन् + इक + टाप् = 'गणिका' (स्त्री)। इसका अर्थ 'जन गण की पत्नी' अथवा 'वह नायिका वह स्त्री जो द्रव्य के लोभ में नायक से प्रिति रखे।[3] साहित्य में गणिका वह नायिका है, जो धन के लोभ से लोगों का मनोरंजन करती है। साधारणतः 'पर पुरूष गामिनी नारी' को वेश्या कहते है।

वेश्यावृत्ति की परिभाषाएँ :

सामान्य शब्दों में 'वेश्यावृत्ति' शब्द का तात्पर्य है वेश्या कर्म से जीविका अर्जन करना। विभिन्न पाश्चात्य एवं भारतीय विद्‌वानों ने वेश्यावृत्ति की परिभाषाएँ दी हैं।

प्रसिद्‌ध समाजशास्त्री इलियट व मैरिल ने वेश्यावृत्ति की व्याख्या करते हुए लिखा है – ''वेश्यावृत्ति स्वच्छंद संभोग व धन प्राप्ति के लिए स्थापित किया गया वह यौन संबंध है जिसमें उद्‌वेगात्मक उदासीनता विद्यमान रहती है।''[4]

अमेरिका के सुविख्यात समाजशास्त्री किंग्सले डेविस ने 'वेश्यावृत्ति में विनिमय, स्वच्छंदता व उद्‌वेगात्मक उदासीनता इत्यादी तत्वों की प्रधानता को स्वीकार किया है।'[5]

पाश्चात्य विद्‌वान वार्डला ने 'अवैध संभोग को वेश्यावृत्ति कहा है।'[6]

सभी पाश्चात्य विद्वानों ने स्वीकार किया है कि 'वेश्यावृत्ति' में स्वच्छंद व उन्मुक्त यौन संबंध के साथ–साथ 'अर्थ' अर्थात् 'धन' का विनिमय भी निहित रहता है। पाश्चात्य विद्वानों ने जहाँ अपनी सभ्यता संस्कृति के अनुरूप वेश्यावृत्ति को परिभाषित किया है वहाँ भारतीय विद्वानों ने अपनी विचारधारा के अनुसार इसका विवेचन किया है प्राचीन भारतीय साहित्य में 'वेश्यावृत्ति' शब्द का उल्लेख अधिक नहीं मिलता किंतु संस्कृति में – वेश्या' को 'पण्य–वधू' भी कहा जाता है। 'पण्य' शब्द का अर्थ है बेचने खरीदने योग्य।

'वेश्यावृत्ति' के संदर्भ में सर्वप्रथम व्यवस्थित भारतीय परिभाषा पुणेकरराव की मिलती है। उनके अनुसार ''वेश्यावृत्ति में दो दल अथवा समूह–वेश्याएँ व उनके ग्राहक आवश्यक रूप में सम्मिलित रहते हैं।''[7]

संतोश कुमार मुखर्जी वेश्यावृत्ति को परिभाषित करते हुए कहते है ''वेश्यावृत्ति का तात्पर्य है कि वेश्या से धन या किसी अन्य रूप में किराये पर स्वच्छंद संभोग करना।''[8]

वेश्यावृत्ति की व्याख्या करनेवाले उपरोक्त सभी विद्वानों ने स्वीकार किया है कि 'वेश्यावृत्ति' में बिना किसी भेदभाव के विभिन्न व्यक्तियों से यौन संबंध स्थापित किए जाते हैं। किंतु स्वच्छंदता के साथ–साथ 'धन' की स्थिति भी विद्यमान रहती है। मुख्य रूप से इन संबंधो में 'अर्थ' ही माध्यम होता है अन्य माध्यम गौण रहते हैं।

वेश्याओं के सामाजिक आयाम :

वर्तमान युग में सामान्य रूप से वेश्याओं के तीन स्तर पाए जाते हैं। अध्ययन की दृष्टि से हमने इसे तीन स्तरों में विभक्त किया हैं तीनों स्तर आर्थिक और सामाजिक दृष्टि से भिन्न है। जो निम्नलिखित रूप में दिए गये हैं।

1. प्रथम आयाम :

प्रथम आयाम के अंतर्गत वह वेश्याएँ आती है जो उच्चभ्रु समाज से संबंधित होती है। इन वेश्याओं के पास स्वयं की गाड़ी बंगला तथा ऐशोआराम की सारी चीजें इनके पास होती हैं। इस श्रेणी की वेश्याएँ बड़े–बड़े होटलों में ऑर्डर पर बुलाई जाती है। चौंका देनेवाली बात यह है कि, इन वेश्याओं में टि.व्ही. ॲक्टर्स, मॉडल्स, बड़े इन्सटिटयूट में पढ़नेवाली लड़कियाँ, तथा उच्चभ्रु घरों में रहनेवाली औरतें आदि का समावेश होता है।

इस वेश्याओं के ग्राहक भी उतने की हाई प्रोफाईल जीवन जीनेवाले होते है। उदाः राजनीतिक नेता, उद्योगपति, बड़े व्यापारी, सरकारी अफसर आदि। प्रथम स्तर की वेश्याएँ होटल मालिकों के फोन पर बुलाने पर भी उपलब्ध होती है। इन वेश्याओं की किंमत प्रति घंटा दस हजार के उपर होती है। या फिर संपूर्ण रात्री के लिए इनकी किंमत लाखों में भी हो सकती है।

दीक्षित की कथा साहित्य में प्रथम स्तर की वेश्याओं का चित्रण हुआ है उनकी 'दृष्टि–परिवर्तन' इस कहानी में नयनतारा के हाई प्रोफाईल वेश्यावृत्ति को चित्रांकित किया गया है। नयनतारा एक वेश्या है जो होटल मालिक के बुलाने पर वह इलाहाबाद आई हुई है। नयनतारा को एक प्रतिष्ठित कहे जानेवाले सिंधी व्यापारी चेलाराम बुटानी के लिए बुलाया गया था। मि. शर्मा भी अपने काम के सिलसिले में इलाहाबाद आकर इसी होटल में रूके हुए हैं तभी उनकी मुलाकात नयनतारा से होती है। और नयनतारा को वे एक अच्छी औरत समझते हैं तथा उसकी इज्जत करते हैं। लेकिन मि. शर्मा जब नयनतारा को सुबह चार बजे चेलाराम बुटानी के कमरे से निकलते देखता है तो वह हैरान रह जाते हैं। नयनतारा स्वयं मि. शर्मा से यह कहकर चौंका देती है कि ''मैंने तो पहले ही कहा है कि मुझे जाननेवाला मेरी इज्जत हीं कर सकता। मैं तो वेश्या हूँ शर्माजी। बाजारू रंडी तो नहीं हूँ। मगर उसी तरह कुछ इधर–उधर घुमती हूँ। कभी इलाहाबाद कभी कानपुर, कभी आगरा कभी लखनऊ और भी दूर–दूर तक जाती हूँ। ये सभी होटलवाले मुझे जानते हैं।''[9]

2. द्वितीय आयाम :

इस श्रेणी की वेश्याओं में कॉल गर्ल्स, सेल्स गर्ल्स, नर्स, कॉलेजों में पढ़ाई करनेवाली लड़कियाँ, कम तनखा पानेवाली औरतें तथा अच्छे घर की स्त्रियाँ आदि होती है। इस वेश्याओं का फोन नंबर साझा होता है इसलिए ग्राहक सीधे तौर पर फोन लगाकर इन्हें जहाँ चाहे वहाँ ले जा सकते हैं। इन वेश्याओं की किंमत दो हजार से लेकर पाँच हजार तक होती है।

प्रश्न उठता है कि यह औरतें और लड़कियाँ अच्छे घर की होने के बावजूद भी इस व्यवसाय को करने के लिए क्यों बाध्य है ? उसका उत्तर यह है कि महानगरीय जीवन की

चकाचौंध में तथा मॉल संस्कृति में होनेवाला खर्चा उनकी आय से तथा पॉकिट मनी से कई ज्यादा होता है। ऐसे में वे अपनी जरूरतों को पुरा करने के लिए तथा ऐशोआराम से जीवन जीने के लिए इस व्यवसाय को अपनाती है। परिणामतः एक बार इस व्यवसाय में आ तो जाती है लेकिन इससे बाहर निकलना उसके लिए कठिन साबित होता है।

3. तृतीय आयाम :

इस श्रेणी की वेश्याएँ आम तौर पर महानगर की झोपड़पट्टियों में, गली–चौराहों, बसस्टॅंड, रेल्वेस्टेशन आदि जगहों पर वेश्या–व्यवसाय करते नजर आती है। यह वेश्याएँ यूं ही इस व्यवसाय में नहीं आती बल्कि इन्हें वेश्यालयों में लाकर बेच दिया जाता है। अपनी विवषता और गरीबी के कारण यह व्यवसाय करने के लिए मजबूर है। किसी को प्रेम में फंसाया गया है, तथा प्रेम का झांसा देकर भगाकर लाया गया और वेश्यालयों में बेच दिया जाता है। किसी के पति ने मार–पीट कर उसे इस व्यवसाय के लिए मजबुर करता है। कोई अपनी परिवार के उदरपूर्ति के लिए इस व्यवसाय में आई है ऐसे कईं कारणों से वेश्या–व्यवसाय में आई हुई औरतें या लड़कियाँ मजबूर होकर इस व्यवसाय को अपनाती है।

इस श्रेणी की वेश्याएँ निम्न दर्जे की मानी जाती है, तथा इन वेश्याओं का ग्राहक भी कम आमदनी कमानेवाला ही होता है। जैसे तृतीय और चतुर्थ श्रेणी में नौकरी करनेवाले, दिनभर काम करनेवाले मजदूर, छोटे व्यापारी तथा मनचले लड़के आदि। इन वेश्याओं की किंमत एक सौ रूपये से लेकर पाँच सौ तक होती है। लेकिन उसे ग्राहक ढुंड़ने के लिए बड़ी बार्गनिंग करनी पड़ती है। तथा उनके सुंदरता के अनुसार उन्हें किमत मिलती है। इसीलिए इन वे याओं को अपना यौवन और सुंदरता टिकाए रखना इनके सामने बड़ी चुनौती है।

दीक्षित के कथा साहित्य में इस श्रेणी की वेश्याओं का चित्रण हुआ है। 'मुरदाघर' उपन्यास तथा 'गंदगी और जिंदगी' इस कहानी में निम्न स्तर की वेश्याओं का चित्रण हुआ है। ऐसी वेश्याएँ सड़क के किनारे ग्राहकों को पटाते दिखाई गई है उदाः ''रोशनियों के खंभे..... और रंडियों की कतार। हँसती है..... खिलखिलाती हैं बार–बार..... जोर लगाकर फब्तियाँ कसती हैं। खाँसी नहीं रूकती। एक झोपड़ा..... अँधेरा कोना..... पड़ी है मरियम। दिन गिन रही है। कब निकलेगा पेट में से ? दूसरा झोपड़ा..... दूसरा अंधेरा कोना। बैठी है एक लड़की..... डरी हुई। कहाँ है मैना! चली जा रही है सबके पीछे।..... तलाश जारी है। कोई नहीं मिलता। रूपए..... दो रूपए..... चार रूपये..... कोई नहीं आता।..... हाँ..... आ रहा है अँधेरे के पीछे से..... जवान मनचला..... मंगला..... नूरन..... चंद्री..... सबकी नजर पड़ती है एक साथ। मंगला सबसे आगे।..... देखो! तुम कोई लोक इधर नईं आना। अभी सेच बोलती मैं। मैंच पटाऊँगी इसकू.....।''[10]

लेखक 'गंदगी और जिंदगी' कहानी में भी इस श्रेणी की वेश्या का चित्रण किया है। इस कहानी की गुलनार अपनी झोपड़ी में ग्राहकों को बुलाकर लाने के लिए बालक महमूद का सहारा लेती है उदाः चौथे–पाँचवें रोज घोड़बंदर रोड़ के एक अंधेरे कोने में वह खड़ी थी। रात हो चुकी थी। सामने हॉटेल के पास दो–चार लोग उसकी तरफ देख रहे थे। वह धीरे–धीरे मुस्कराई..... पास में महमूद खड़ा था। गुलनार कहती है – ''क्या है रे ?''

''तुम्हेरे कू इदर देखा, कर के चला आया।

''देख रे एक काम करेंगा ?'' महमूद के चहरे पर चमक आई बोला,

''जरूर करूंगा बाई!''

''हॉटल के कने तीन आदमी खड़ेला है ना ? उनकू मेरे खोली पे ले के चलेंगा ?

''हौ, चलेंगा!''

महमूद जाने लगा। गुल ने रोक कर कहा, ''सुन तो क्या बोलेंगा!'' महमूद मुँह देखने लगा। गुल बोली, बोलना, बाई भोत अच्छा है। एक का तीन रूपिया लेंगी! तुम याद करेंगा।..... तीन नहीं मानेंगा तो दो बोलना क्या!''[11]

उपरोक्त वेश्याओं के आयामों के साथ–साथ वेश्यावृत्ति के कई प्रकार भी समाज में विद्यमान है। उदाहरणार्थ दासी, गणिका, धार्मिक वेश्या (देवदासी), स्ट्रीट गर्ल, कॉलगर्ल, रखेल आदि।

निष्कर्ष :

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है की, दीक्षित के कथासाहित्य में वर्तमान स्थिति में वेश्याओं के साधारणतः तीन स्तर पाये जाते हैं। जो अध्ययन की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। लेखक ने अपने

कथा साहित्य में तृतीय श्रेणी की वेश्याओं पर ज्यादा लक्ष केंद्रित किया है जो सार्वजनिक स्थल पर इस व्यवसाय के लिए खड़ी होती है। मैना, पार्वती, नूरन, मरियम, मंगला, चमेली, गुलनार आदि वेश्याएँ इस टाईप की है तो दूसरी ओर नयनतारा नामक हाई प्रोफाईल वेश्या है जो बड़े–बड़े होटलों में वेश्या–व्यवसाय करती है। भले ही दीखित के साहित्य में वेश्याओं के तीन स्तर बताए गए है लेकीन इन वेश्याओं को एम ही काम एक ही है। विवशता में चंद पैसों के लिए लोगों की लैंगिक भूक को मिटाना और उससे जो अर्थार्जन प्राप्त होता है उससे अपने परिवार और अपना उदरनिर्वाह करना यही वास्तविक रूप है।

संदर्भ :

1. आधुनिक हिंदी शब्दकोष : सं. गोविंद चातक तक्षशिला प्रकाशन, अंसारी रोड़, दरियागंज, नई दिल्ली, पृ. क्र. 1986
2. व्यावहारिक पर्याय कोष : सं. महेंद्र चतुर्वेदी व ओमप्रकाश गब्बा, पृ. क्र. 164
3. मानक हिंदी कोष : रामचंद्र वर्मा, प्रयाग हिंदी साहित्य सम्मेलन, पृ. क्र. 67
4. आधुनिक हिंदी उपन्यास, व्यक्ति विघटन के निकषपर : डॉ. नीरज जैन, निर्मल पब्लिकेशन, शहादरा, दिल्ली, पृ. क्र. 53
5. वही, पृ. क्र. 53
6. वही, पृ. क्र. 53
7. वही, पृ. क्र. 53
8. वही, पृ. क्र. 53
9. शुरूआत तथा अन्य कहानियाँ, जगदंबा प्रसाद दीक्षित, संभावना प्रकाशन, रेवती कुंज हापुड, 245101, पृ. क्र. 105
10. मुरदाघर : जगदंबा प्रसाद दीक्षित, राधाकृष्ण प्रकाशन, प्राईवेट लिमिटेड़, दिल्ली, पृ. क्र. 28
11. शुरूआत तथा अन्य कहानियाँ : पृ. क्र. 127